Research Review
The Refereed & Peer Review International Journal
www.researchreviewonline.com
ISSN: 2321- 4708
Feb. 2019, Year - 5 (70)
Paper ID: RRJ305800

संजीव के उपन्यासों में व्यक्त आदिवासी शोषण

सांडपा माधवी केश
हिन्दी भवन,
सौराष्ट्र विश्वविद्यालय,
राजकोट

संजीव की औपन्यासिक चेतना सामाजिक-आर्थिक विषमताओं, विड़म्बनाओं और विसंगतियों से निःसृत संघर्ष-प्रक्रिया से निर्मित है । अपने उपन्यासों में उन्होंने प्रगतिशिल विचारधारा के आलोक में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक परिस्थितियों का आंकन करते हुए शोषक शक्तियों का रचनात्मक शक्तियों का रचनात्मक प्रतिवाद प्रस्तुत किया है । उनके उपन्यासों की घटनाओं, परिवेश और चरित्रों में आँचलिक विशेषताओं को स्पष्ट लक्षित किया जा सकता है। किन्तु अन्तर्वस्तु और उद्देश्य की दृष्टि से ये उपन्यास प्रेमचन्द की परम्परा को बदले हुए संदर्भों में नया आयाम देते है । समय और समाज के अन्तर्सम्बन्धों को संजीव के उपन्यास विवक्षित करते हुए राजनीतिक दमन, आर्थिक शोषण और संस्कृतिक रूढ़ियों के विरूद्ध सार्थक प्रतिशोध दर्ज करते है । संजीव के उपन्यासों एवं कहानियों में आदिवासी जीवन संबंधी विचारबोध विविध आयमों को हम निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं-

'धार' उपन्यास के पूँजीपति महेंद्रबाबू आदिवासियों की जमीन पर तेजाब का कारखाना शुरू करते हैं । फैक्टरी में आदिवासियों को काम दिया जाता है । तेजाब कारखाने से यहाँ का प्राकृतिक परिवेश प्रदूषित मिलता है । धूण और धुए में जलती बस्तियाँ, अंधनंगे बच्चे, दमघोटू वातावरण, खाँसते लोग, मरियल कुत्ते की तरह पेड और गंदगी का यहाँ साम्राज्य है । पूँजीपति धन कमाने के स्वार्थ में आदिवासियों की जमीन तथा जिंदगी भी बरबाद करते हैं । इतना ही नहीं तेजाब फैक्टरी में काम करने वाले मजदूरों को उनकी मजदूरी भी नहीं देते है । संजीव लिखते हैं- "चार-चार महीनों की तनख्वाह रोक के रखा पूरा बाँसगडा में जहर घोल दिया सबको लंगडा, लूला, अपाहिज और रोगी बना दिया ।"[१] 'जंगल जहाँ शुरू होता है' उपन्यास में थारू जनजाति के लोगों का जमींदार शोषण करते हैं । डाकू इन्हें हथियार और सहयोग प्राप्त करने के साधन के रूप में इस्तेमाल करते हैं और पुलिस इन्हें डाकुओं से मिला हुआ समझकर इनकी खोज-खबर पाने के लिए इन पर अत्याचार करती है । मलारी को इसी शक के आधार पर पुलिस पकडती हैं। तब संजीव लिखते है-"हाकिम ! हमर कसूर बस इतना है कि गरीब है, औरत जात हैं । जो ही आता है डर-धमका के जबरदस्ती करने को मजबूर करता है ।"[२] मलारी की याचना, दर्द, वेदना का असर पुलिस पर नहीं होता । एक अबला नारी के साथ पुलिस के किये व्यवहार को संजीव इस प्रकार

Publishing URL: : http://www.researchreviewonline.com/issues/volume-5-issue-70-february-2019/RRJ305800

Research Review **ISSN: 2321- 4708**
The Refereed & Peer Review International Journal **Feb. 2019, Year - 5 (70)**
www.researchreviewonline.com **Paper ID: RRJ305800**

रेखांकित करते है–"सहसा सुदर्शनसिंह का चौड़ा हाथ उसके मुँह पर पड़ा और वह खाट पर सीधे जा भहराइ । प्रेम प्रकाश ने सीधे रायफल तान ली, बोल भोसड़ी, रंडी, कुत्तिया। बोल मादरचोद। नहीं तो इ रायफल तेरे पेट में डाल देंगे ।"[३]

सरकारी योजनाओं का ठीक तरह से क्रियान्वयन न होना अथवा उसमें कुछ त्रुटियाँ रह जाना आदिवासी लोगों के लिए सरकार की योजना का लाभ देने के अलावा आधिकारियों ने बीच में ही योजना का पैसा हड़प करना भ्रष्टाचार कहलाता है मुझे यहाँ डॉ.पांडुरंग पाटील के विचार उचित लगते हैं–"विकृत जनतंत्र के कारण इस युग में व्यवस्था शब्द को सुनते ही वितृष्णा होने लगती है । कर्मचारियों की कार्य पद्धति इतनी भ्रष्ट हो गइ कि इमानदार व्यक्ति को अपना जीवन निर्वाह करना महँगा पड़ रहा है । भ्रष्ट कर्मियों के कृत्य दिनों–दिन असहाय होते जा रहे हैं ।"[४] इस यंत्रणा में सामान्य लोगों का ही शोषण होता है । अधिकारी अपने पद का गलत इस्तेमाल कर रिश्वत, लेकर अनैतिकता को बढ़ावा देते हैं ।

'धार' उपन्यास में अविनाश शर्मा, मैना आदिवासियों के सहयोग से सहकारिता पर आधारित जन खदान का निर्माण करते हैं । कठोर मेहनत, श्रद्धा, संगठन के बल पर कुछ ही दिनों में जन खदान एक नावलौकिक प्राप्त करता है सारे लोग मिलकर एक निर्णय लेते। हैं कि उदर निर्वाह के लिए आवश्यक कोयला लेकर बाकी कोयला राष्ट्र को सौपा जाए । कुछ ही दिनों में राष्ट्र को सौपा कोयला पहाड़ जैसा रूप धारण कर लेता है । इस संदर्भ में शर्मा अनेक बार सरकार को लिखते हैं लेकिन उनके कान पर जूँ तक नहीं रेंगती । सरकारी अधिकारी आते भी हैं तो खानापूर्ति की मानसिकता लेकर सरकारी अधिकारियों का खदान, बच्चागृह, पाठशाला, अस्पताल, कैंटीन, रजिस्टर फाइल आदि सभी में उन्हें कइ भी खोट नहीं मिलती है । सरकारी अधिकारी जनखदान का काम सुचारू ढंग से देखकर गुस्सा होते हैं । इस प्रसंग को लेकर संजीव लिखते हैं– "काम का ढंग रख रखाव, श्रमिकों का मनोबल सारा कुछ देखकर वे निराश हुए, उन्हें खोट चाहिए थी । मगर वह मिल नहीं रही थी ।"[५] इस कथन से विदित होता है कि सरकारी अधिकारियों को अच्छा काम देखकर खुश होना चाहिए था लेकिन वे निराश होते हैं । इसलिए कि उन्हें कोइ खोट नहीं मिल रही थी। इससे स्पष्ट होता है कि भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति आधिकारियों में कहाँ तक उतर गयी है । संजीव के उपन्यास–साहित्य में भ्रष्ट अधिकारियों का यथार्थवादी अंकन परिलक्षित होता है ।

'पाँव तले की दूब' उपन्यास में झारखंड में स्थित आदिवासियों का चित्रण हुआ है । यहाँ उद्योगपति नये–नये उद्योग शुरू करने के लिए आदिवासियों की जमीन ले लेते हैं । जिनकी जमीन पर कारखाने खड़े होते हैं । उन्हें टोटली डिप्राईन किया जाता है । भ्रष्ट अधिकारियों द्वारा आदिवासियों के शोषण को देखकर कथानायक

Publishing URL: : http://www.researchreviewonline.com/issues/volume-5-issue-70-february-2019/RRJ305800

ISSN: 2321- 4708
Feb. 2019, Year - 5 (70)
Paper ID: RRJ305800

कहता है– "उन्हें जमीन से भी बेदखल किया जा रहा है । मुआवजा भी अफसरों के पेट में ।"[१] इस कथन से विदित होता है कि भ्रष्ट अधिकारी उनका शोषण कर उन्हें कंगाल बना रहे हैं ।

'धार्श्व' उपन्यास में संथाल आदिवासियों की स्थिति बहुत भयानक परिलक्षित होती है । अवैध कोयला निकालना बेचना और उपजीविका चलाना यहाँ के लोगों का साधन है । एक दिन उपन्यास की नायिका कोइला बेचने के बाद बाजार में चली जाती है–"सस्ता और इफरात ढूँढने के क्रम में वे कई दुकानों से भिखमंगों की तरह दुरदुराए गए । शाम हो गयी, तब जाकर भर पाये उसके थैले, आटा मोटा और थोडा महीन चावल के अलग–अलग पॅकेट, सस्ती किस्म की दाल, नमक मसाला, बची खुची आधी सड़ी सब्जियाँ, आलू सीता के लिए छापेवाली चटक साड़ी, देशी ठर्रे की एक बोतल अपने लिए और बासी जलेबियाँ बच्चों के लिए ।"[२] इस कथन से विदित होता है कि संथाली आदिवासियों को गरीबी के कारण सड़ी सब्जियाँ, बाँसी जलेबियाँ खरीदनी पड़ती हैं ।

'पाँव तले की दूब' उपन्यास में मेझिया में रहने वाले आदिवासियों के गरीबी का यथार्थवादी चित्रण परिलक्षित होता है । कथानायक कहता है– "पर जो चीज आँखों को सबसे ज्यादा चुभती है वह है प्रौढ़ों और वृद्धों का दल जिनमें ज्यादा तर के बदन पर कमीज या गंजी भी नहीं सिर्फ मटमैली धोती है या फिर मुचडे हुए पैंट, जिन्हें लतों या रस्सी से कमर में बाँध लिया गया है । उसके ऊपर नंगे बदन की झुर्रियोंदार खुश्क खाल जले पठार–सी चिलक रही है । सफेद बाल और दाढ़ी के सूखे विवर्ण चेहरों के बीच आँखें दम तोडती मछलियों–सी ।"[३] इस कथन से विदित होता है कि मेझियाँ गाँ के लोगों का दारिद्र कितना भयानक है । पाँवर प्लान्ट आने के कारण उन्हें लगा था शायद हालात बदल जायेंगे लेकिन स्थिति और भी भयानक बन जाती है ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि संजीव ने अपने उपन्यास–साहित्य में भ्रष्ट अधिकारियों की अमानवीय नीति पर प्रकाश डालते हुए आदिवासियों की रुदनीय स्थिति एवं पशु से भी गयी बीती जिंदगी को अभिव्यक्त किया है ।

संदर्भ संकेत

१–संजीव – 'धार्श्व', पृ–६०
२–संजीव – 'जंगल जहाँ शुरू होता है', पृ–१९६
३–सजीव – वही, पृ–१९६
४–पाटील डॉ.पांडुरंग – 'देवेश ठाकुर और उनका साहित्य', पृ–१३८
५–संजीव – 'धार्श्व', पृ–१५५